17 जुलाई 2013, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-32 / 2012-14

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे

जी-जागरण पर प्रतिदिन प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 36, अंक : 8 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

जुलाई (द्वितीय), 2013 (वीर नि. संवत्-2539) सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

अमेरिका आदि देशों में तत्त्वज्ञान की धूम

अमेरिका आदि पाश्चात्य देशों के अनेक शहरों में गुरुदेवश्री से प्राप्त आध्यात्मिक तत्त्वज्ञान को सुनने वाले सैंकड़ों गहन अभ्यासी आज आत्मकल्याण के मार्ग पर लगे हुये हैं। वहाँ के प्रचुर भौतिक संसाधनों से युक्त वातावरण में जल से भिन्न कमलवत् रहते हुए कुछ लोग जब द्रव्य-गुण-पर्याय, सम्यग्दर्शन, अभेद अखण्ड आत्मा की निर्विकल्प अनुभूति की सूक्ष्म गहन चर्चा करते हैं तो स्पष्ट प्रतिभासित होता है कि क्षेत्र, काल और परिस्थितियाँ इस जीव की साधना में बाधक नहीं हैं।

आज अमेरिका, कनाडा, मलेशिया, सिंगापुर, इंग्लैण्ड आदि अनेक देशों में भी वर्षभर प्रतिदिन स्वाध्याय करना लोगों की दिनचर्या का अभिन्न अंग बन गया है। अनेक अभ्यासी मुमुक्षु तो ऐसे हैं, जिन्होंने अपने जीवन में गुरुदेवश्री कानजीस्वामी को देखा भी नहीं है तथा अनेक तो ऐसे भी हैं, जो आज तक कभी भारत में ही नहीं आये हैं।

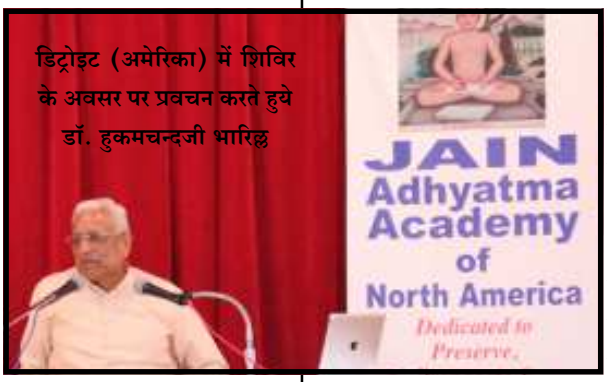

डिट्रोइट (अमेरिका) में शिविर के अवसर पर प्रवचन करते हुये डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल

विशिष्ट क्षयोपशम के धनी तर्कशील लोगों में आध्यात्मिक तत्त्वज्ञान के प्रति यह रुचि डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा किये गये 31 वर्षों के अथक् प्रयासों का ही सुपरिणाम है।

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी दिनांक 14 जून से 23 जुलाई तक डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के न्यूयॉर्क, डलास, शिकागो, डेट्रोइट, लॉस एन्जिल्स, सिंगापुर, क्वालालम्पुर (मलेशिया) आदि अनेक शहरों में अध्यात्मरस गर्भित मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा दिनांक 30 मई से 5 जुलाई तक डलास, शिकागो, मियामी, टोरंटो (कनाडा) एवं डेट्रोइट में हुये जिनागम के विविध सूक्ष्म विषयों पर सारगर्भित प्रवचनों का श्रोताओं ने भरपूर लाभ लिया। इसके अतिरिक्त गहन विषयों पर गंभीर तत्त्वचर्चा तथा डलास में सामूहिक पूजन एवं टोरंटो (कनाडा) में शान्ति विधान का भी आयोजन किया गया।

इस वर्ष डेट्रोइट में आयोजित 'जाना शिविर' एवं 'जैना कन्वेन्शन' में विदुषी स्वानुभूति जैन मुम्बई के मार्मिक प्रवचनों के आकर्षक प्रस्तुतिकरण ने श्रोताओं का मन मोह लिया।

डेट्रोइट में आयोजित हुआ JAANA शिविर -

जैन अध्यात्म एकेडमी ऑफ नॉर्थ अमेरिका (JAANA) द्वारा प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी 13वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर दिनांक 30 जून से 4 जुलाई तक डेट्रोइट में आयोजित हुआ।

शिविर का विधिवत् शुभारम्भ नित्यनियम पूजन के पश्चात् गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के वीडियो प्रवचन से हुआ।

इस अवसर पर प्रतिदिन प्रातः अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा प्रवचनसार के ज्ञेयतत्त्व प्रज्ञापन की प्रारंभिक गाथाओं पर, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा के दोनों समय द्रव्यार्थिक-पर्यायार्थिक नयों पर एवं विदुषी स्वानुभूति जैन के दोनों समय समयसार की गाथा 31 से 33 तक प्रवचनों का लाभ मिला।

प्रतिदिन सायंकाल शंका-समाधान (ज्ञान गोष्ठी) का कार्यक्रम आयोजित किया जाता था, जिसमें तीनों विद्वानों के माध्यम से उपस्थित जनसमुदाय की शंकाओं का समाधान होता था। कार्यक्रम में श्रोताओं द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों से उनकी तत्त्व की सूक्ष्म पकड़ स्पष्ट परिलक्षित होती थी।

शिविर में अमेरिका एवं कनाडा के विभिन्न नगरों से पधारे लगभग 100-125 आत्मार्थियों ने धर्मलाभ लिया।

श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा संचालित

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में

36 वाँ बृहद् आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर

(दिनांक 4 अगस्त से 13 अगस्त, 2013 तक)

शिविर में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल के अतिरिक्त अन्य अनेक विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ प्राप्त होगा।

कृपया अपने पधारने की पूर्व सूचना अवश्य देवें, ताकि आपके आवास आदि की व्यवस्था समुचित रूप से हो सके।

आप सभी सादर आमंत्रित हैं।

सम्पादकीय –

जैनधर्म : जन-जन का धर्म

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल, जयपुर

जैनधर्म किसी जाति विशेष का नहीं, किसी सम्प्रदाय का नहीं; अपितु यह तो जन-जन का धर्म है; क्योंकि प्रथम तो इसको सभी जाति के व्यक्ति अच्छा मानते हैं। भगवान महावीर स्वामी स्वयं क्षत्रिय थे। उनके प्रमुख शिष्य गौतम गणधर ब्राह्मण थे। भगवान महावीर की धर्मसभा (समवशरण) के श्रोता सभी जाति के मानव, देवगण तो थे ही, पशु-पक्षी भी उनके श्रोता थे।

प्रश्न : फिर यह वणिकों के हाथ कैसे लग गया ?

उत्तर : बनिया (वणिक) बड़े होशियार होते हैं, तभी तो उन्होंने सबसे बढिया माल पर अपना कब्जा कर लिया है।

प्रश्न : आप इसे बढिया किस अर्थ में कहते हो ?

उत्तर : इस धर्म में राग-द्वेष, मोह-ममता, क्रोध-मान-माया-लोभ तथा हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील, परिग्रह और सात कुव्यसन, मद्य-मांस-मधु आदि हिंसाजनित एवं हिंसा से उत्पन्न सभी वस्तुओं के सेवन को बुरा बताया गया है, जिन्हें सभी जीव बुरा मानते हैं।

इसके विरुद्ध इस जैनधर्म में अहिंसा, अनेकान्त और उत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, शौच, सत्य संयम आदि 10 धर्मों को प्राप्त करने के लिए साधना आराधना की जाती है। जोकि विश्वभर के लिए समान रूप से सुखदायी है। ऐसा कौनसा व्यक्ति है, कौनसा समाज है या कौनसा धर्म है जो क्रोधादि विकारों को, हिंसादि पापों को और काम-विकार वासनाओं को बुरा नहीं मानता, अत: यह धर्म सार्वजनिक है, सार्वभौमिक भी है; क्योंकि ऐसा कोई स्थान नहीं है, जहाँ इसे सुखद न माना जाता हो।

प्रश्न : क्या अन्य धर्मों में ऐसे कथन बिलकुल नहीं है ?

उत्तर : कथन तो सभी जगह सब प्रकार के हैं; किन्तु तर्क, युक्ति और आगम के परिप्रेक्ष्य में जैसी वैज्ञानिक व्याख्यायें इस धर्म में हैं वैसी अन्यत्र दुर्लभ हैं। अधिकांश धर्मों में बाह्य क्रियाकाण्ड में धर्म सिमटकर रह गया है तथा भोगविलासियों ने तो धर्म के नाम पर भी हिंसा जनित पदार्थों को भोगने के उपाय खोज लिये हैं।

प्रश्न : ऐसे कोई उदाहरण है ?

उत्तर : जैनधर्म के सिवाय अन्य ईसाई, मुस्लिम एवं अनेक हिन्दू भी मांसाहार का समर्थन करते पाये जाते हैं। हिंसा जनित वस्तुओं का उपयोग तो करते ही हैं, उनका समर्थन भी करते हैं। उन क्रियाओं को धर्म का जामा पहना देते हैं।

जबकि जैनधर्म कहता है कि –

मनुष्य प्रकृति से शाकाहारी,
मांस उसे अनुकूल नहीं है,
पशु भी मानव जैसे प्राणी,
वे मेवा फल-फूल नहीं हैं।

हिंसा के अलावा झूठ, चोरी, कुशील एवं परिग्रह संग्रह आदि भी नैतिक दृष्टि से बुरे माने जाते हैं। सभी जाति व वर्ग के लोग इन्हें अच्छा नहीं मानते, तभी तो लोग इन अनैतिक कार्यों को छुपकर करते हैं। ये पाप प्रकट होने पर लोक में उनकी निन्दा भी होती है। फिर भी धर्म के नाम पर यदि कोई इन्हें भी उचित ठहरा देते हैं तो यह सर्वथा अनुचित है।

जबकि इनके विपरीत –

1. अहिंसा, अनेकान्त, स्याद्वाद, अपरिग्रह, अकर्तृत्व जैसे अद्भुत सिद्धान्त इस जैनधर्म की मौलिक देन है।

2. जैनधर्म के अनुसार विश्व व्यवस्था अनादि निधन है।

3. सभी आत्मायें समान है, कोई छोटा-बड़ा नहीं है।

4. कोई भी आत्मा अपना स्वरूप जानकर, पहचानकर उसी में जमकर रमकर परमात्मा बन सकता है।

इसप्रकार स्वतंत्रता, समानता, सह-अस्तित्व और स्वावलम्बन इस दर्शन की मौलिक देन है। कहा भी है –

जिसने बताया जगत को, प्रत्येक कण स्वाधीन है।
कर्ता न धर्ता कोई है, अणु-अणु स्वयं में लीन है।।
आतम बने परमातमा, हो शान्ति सारे देश में।
है देशना सर्वोदयी, महावीर के संदेश में।।

अत: यह स्पष्ट ही है कि जैनधर्म ही जन-जन का धर्म है। जिस प्रवृत्ति में हिंसा हो, अनैतिकता हो, वह प्रवृत्ति कदापि धर्म नहीं हो सकती। ●

जैन बालिका संस्कार संस्थान का उद्घाटन संपन्न

उदयपुर (राज.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान शाश्वत पारमार्थिक ट्रस्ट उदयपुर द्वारा बालिकाओं को जैन तत्त्वज्ञान व श्रावकाचार के संस्कारों के साथ उच्च लौकिक शिक्षा प्रदान कराने हेतु जैन बालिका संस्कार संस्थान का शुभारंभ हिरणमगरी सैक्टर 13 में किया गया है। जिसका विधिवत् उद्घाटन दिनांक 29 व 30 जून को किया गया। इस अवर पर पंचपरमेष्ठी विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर के प्रवचनों का लाभ उपस्थित जनसमुदाय को प्राप्त हुआ।

कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री ताराचन्दजी जैन, मुख्य अतिथि श्री अजितजी जैन बड़ौदा एवं ध्वजारोहणकर्ता श्री निहालचंदजी जैन जयपुर थे। विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री प्रेमचन्दजी बजाज कोटा, डॉ. वासन्तीबेन शाह मुम्बई, श्री राजकुमारजी अजमेरा रतलाम, श्री बृजलालजी जैन मुम्बई, श्री महीपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा, श्री नेमिचन्दजी बघेरवाल भीलवाड़ा, श्री प्रदीपजी कुमावत (निदेशक-आलोक संस्थान), श्री सुजानमलजी गदिया, श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री (जिलाध्यक्ष-भा.ज.यु.मो.), पं. ऋषभकुमारजी शास्त्री, पण्डित खेमचन्दजी शास्त्री उदयपुर आदि महानुभाव उपस्थित थे। विधान के आमंत्रणकर्ता श्री माणकलाल ठाकुर्डिया उदयपुर थे।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री अजितजी जैन बड़ौदा ने एक भव्य संकुल के निर्माण करने की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए कहा कि बालिकाओं को संस्कारित किया जाना अत्यावश्यक है। यदि बालिकाएँ संस्कारित होंगी तभी श्रावकाचार जीवित रह सकेगा। अत: सभी को देश के इस दूसरे बालिका संस्थान को भरपूर सहयोग प्रदान करना चाहिये, जिससे संस्थान में अधिक से अधिक बालिकाओं को प्रवेश दिया जा सके। एतदर्थ उन्होंने प्रतिछात्रा सहयोग राशि 21 हजार रुपये व सहायक सामग्री सहयोग राशि 11 हजार रुपये के रूप में सहयोग करने की अपील की।

डॉ. मंजुलता जैन कोटा ने आधुनिक युग में संस्कारों की आवश्यकता पर प्रकाश डाला।

इस वर्ष संस्कार की कक्षा 9 में दिल्ली, उ.प्र., म.प्र. व राजस्थान की 11 बालिकाओं को प्रवेश दिया गया है।

इस अवसर पर डॉ. ममता जैन के निर्देशन में संस्थान की बालिकाओं द्वारा भावभीनी प्रस्तुतियाँ प्रस्तुत की गईं।

कार्यक्रम का संचालन पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा ने किया।

विधि-विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित अजितकुमारजी शास्त्री अलवर, पण्डित रतनचन्दजी शास्त्री कोटा व पण्डित अंकितजी शास्त्री लूणदा द्वारा भक्तिभावपूर्वक सम्पन्न कराया गया। **– नरेन्द्रकुमार दलावत**

हार्दिक बधाई

1. सांगली (महा.) निवासी ए.ए. पाटील (कन्सल्टिंग इंजीनियर व गवर्नमेन्ट वेल्यूएटर) के सुपुत्र **अभिषेक अण्णासाहेब पाटील** (बी.ई. इलेक्ट्रॉनिक्स) अमेरिका की बफेलो युनिवर्सिटी में मैनेजमेन्ट इन इन्फॉर्मेशन सिस्टम विषय में 'ए क्लास' डिग्री प्राप्त कर उत्तीर्ण हुआ। चि. अभिषेक बागवाडी गुरुकुल के पूर्व उपाध्यक्ष श्री अण्णासाहेब खेमलापुरे का नाती है।

2. नई दिल्ली : यहाँ श्री प्रवीणकुमारजी जैन (अध्यक्ष-अ.भा.जैन युवा फैडरेशन दिल्ली) की सुपुत्री एवं आत्मार्थी कन्या विद्या निकेतन से उत्तीर्ण आयुषी जैन ने 2012-13 में आयोजित सी.बी.एस.ई. की बारहवीं की परीक्षा में 94.4 प्रतिशत अंक प्राप्त कर बालभारती विद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। साथ ही विद्यानिकेतन में भी 93.5 प्रतिशत अंक प्राप्त कर द्वितीय स्थान प्राप्त किया है।

इस उपलब्धि हेतु जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

श्री समयसार महामण्डल विधान एवं बाल शिक्षण शिविर संपन्न

खंडवा (म.प्र.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट के अन्तर्गत दिनांक 23 से 30 मई तक श्री समयसार मंडल विधान एवं बाल शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर एवं विदुषी राजकुमारी बहिन दिल्ली द्वारा प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ प्राप्त हुआ।

कार्यक्रम में लगभग 300-350 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया। बाल कक्षाओं में लगभग 500-600 बालकों ने जैनधर्म के संस्कार ग्रहण किये।

विधि-विधान के संपूर्ण कार्य ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली के निर्देशन में पण्डित सुनीलजी 'धवल' भोपाल, पण्डित अशोककुमारजी उज्जैन, पण्डित रमेशजी ज्ञायक इन्दौर द्वारा संपन्न हुआ।

दशलक्षण पर्व में सुनिश्चित विद्वान

दशलक्षण महापर्व के अवसर पर निम्न विद्वानों का स्थान सुनिश्चित हुआ है, जो निम्नानुसार है -

(1) डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल	- इन्दौर (म.प्र.)
(2) ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना	- बेलगांव (कर्नाटक)
(3) पण्डित अभयजी शास्त्री देवलाली	- दिल्ली (विश्वासनगर)
(4) पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर	- शिकागो (अमेरिका)
(5) ब्र. हेमचन्दजी 'हेम' देवलाली	- नागपुर (महा.)
(6) पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जैन जबलपुर	-वस्त्रापुर-अहमदाबाद (गुज.)
(7) संजयजी शास्त्री अलीगढ	- मुम्बई (सीमन्धर जिनालय)
(8) पण्डित देवेन्द्रकुमारजी बिजौलिया	- इन्दौर (साधना नगर)
(9) डॉ. दीपकजी जैन जयपुर	- गजपंथा-नासिक (महा.)

धर्म का वास्तविक स्वरूप

– संजीवकुमार गोधा, जयपुर

धर्म किसे कहते हैं, धर्म का क्या स्वरूप है। हर व्यक्ति धर्म करना चाहता है; किन्तु धर्म होता कैसे है, यह कोई जानना नहीं चाहता। क्या मंदिर जाना धर्म है ? पूजन करना धर्म है ? माला का जाप करना, व्रत करना, उपवास करना, मंदिर बनवाना, प्रतिष्ठा करना, धार्मिक आयोजन करना-कराना, स्वाध्याय करना, प्रवचन सुनना - क्या यही धर्म है ?

यदि मैं रोजाना मन्दिर नहीं जा सकता, मेरे शहर में मन्दिर नहीं है, तो क्या मैं धर्म नहीं कर सकता। क्या शारीरिक अशक्त अवस्था में धर्म नहीं होता ?

धर्म पराधीन नहीं स्वाधीन क्रिया है, जिसमें किंचित भी परतंत्रता हो, वहाँ धर्म कैसा ? जिस पर कोई प्रतिबंध लगा सके, उसमें धर्म नहीं हो सकता ? उक्त सभी बातों में कुछ न कुछ पराधीनता अवश्य है; अत: उनमें वास्तविक धर्म नहीं हो सकता। ये सभी अधर्म है - ऐसा मैं नहीं कहना चाहता; इन्हें भी व्यवहार से धर्म कहा जाता है। धर्म शब्द का प्रयोग अलग-अलग अर्थों में होता है। किसी कवि की बहुत प्रसिद्ध पंक्तियाँ हैं -

धर्म करत संसार सुख, धर्म करत निर्वाण।
धर्म पंथ साधे बिना, नर तिर्यंच समान।।

यहाँ प्रथम पंक्ति में दो जगह धर्म शब्द का प्रयोग किया गया है। दोनों जगह धर्म शब्द का अर्थ अलग-अलग है। यहाँ धर्म करने से संसार सुख व निर्वाण दोनों की बात कही है; किन्तु एक ही कारण से दो विरुद्ध कार्य नहीं हो सकते। संसार व मोक्ष दोनों परस्पर विरुद्ध कार्य हैं। वस्तुत: यहाँ एक जगह व्यवहार धर्म की बात कही है और दूसरी जगह निश्चय धर्म की बात कही है। उक्त समस्त क्रिया प्रवृत्तियाँ शुभभाव रूप होने से व्यवहार से धर्म कही जाती है। आचार्य नेमीचन्द्रस्वामी कहते हैं -

'असुहादो विणिवित्ती सुहे पवित्ती य जाण चारित्तं।'

अर्थात् अशुभ कार्यों से निवृत्त होना और शुभ कार्यों में प्रवृत्त होना व्यवहार से चारित्र है। इसे व्यवहार धर्म कहते हैं; किन्तु निश्चय धर्म तो इन सबसे ऊपर उठकर होना चाहिए।

आचार्य समन्तभद्र रत्नकरण्ड श्रावकाचार नामक ग्रन्थ प्रारम्भ करते हुए लिखते है-

देशयामि समीचीनं धर्मं कर्म निवर्हणम्।
संसार दुखत: सत्वान् यो धरत्युत्तमे सुखे।।

– रत्नकरण्ड श्रावकाचार, श्लोक 2

यहाँ आचार्य समन्तभद्र उस सच्चे धर्म का उपदेश देने की बात कह रहे हैं, जो प्राणियों को कर्मों की निवृत्ति पूर्वक संसार दु:खों से छुड़ाकर उत्तम सुख को प्राप्त करा देता है।

आचार्य पूज्यपाद कहते हैं कि - **'इष्टस्थाने धत्ते इति धर्म:'** अर्थात् जो इष्ट स्थान में धारण करता है, उसे धर्म कहते हैं।

आखिर वह कौनसा धर्म होगा, जिसे यहाँ उत्तम सुख की प्राप्ति का कारण कहा है ? निश्चित तौर पर वह धर्म नाचने-गाने, भक्ति-पूजनादि वाला अथवा 2-4 दिन भूखे रहने वाला तो नहीं हो सकता; क्योंकि ये कार्य तो करते-करते ही कुछ देर में आकुलता होने लगती है, थकान लगने लगती है। जिस क्रिया में आकुलता, थकान अथवा दु:ख महसूस हो - वह उत्तम सुख की प्राप्ति करा देने वाला यथार्थ (सच्चा) धर्म नहीं हो सकता।

आचार्य कुन्दकुन्द ने धर्म की परिभाषा बताते हुए अष्टपाहुड़ में **'दंसण मूलो धम्मो'** तथा प्रवचनसार में **'चारित्तं खलु धम्मो'** कहा है। कार्तिकेयानुप्रेक्षा में **'धम्मो वत्थु सहावो'** का कथन भी मिलता है।

वस्तुत: प्रत्येक वस्तु का अपना निजी स्वभाव है और उस स्वभाव को ही उसका धर्म कहते हैं। अग्नि का स्वभाव ऊष्णता है और वही उसका धर्म है, इसी प्रकार जल का स्वभाव शीतलता, मिश्री का स्वभाव मीठापना, नमक का स्वभाव खारापना है। आत्मा (जीव) का भी अपना अलग स्वभाव है, वह है - जानना-देखना। दुनिया में कोई भी वस्तु अपने स्वभाव को कभी भी नहीं छोड़ती है। यही बात पंचास्तिकाय गाथा-7 में कहते हैं - **'णिच्चं सगं सहावं ण विजहंति'**।

यदि इस **'वत्थु सहावो धम्मो'** की अपेक्षा बात करें तो प्रत्येक वस्तु स्वभाव से धर्मात्मा है। हम भी सभी अपने जाननपने को कभी न छोड़ने से धर्मात्मा ही हुये।

यदि इसी बात को स्वीकार कर लिया जाये तो फिर धर्म करने का प्रश्न ही कहाँ रहा ? सभी स्वयमेव ही धर्मात्मा हो गये। किन्तु जब **'दंसण मूलो धम्मो'** और **'चारित्तं खलु धम्मो'** अर्थात् सम्यग्दर्शन को धर्म का मूल और चारित्र को साक्षात धर्म कहते हैं तो बात स्पष्ट हो जाती है कि जीवन में प्रकट होने वाला धर्म दूसरे प्रकार का है।

जैन दर्शन अनेकान्तवादी दर्शन है। यहाँ सभी बातें किसी न किसी अपेक्षा से कही जाती है, कोई बात सर्वथा नहीं होती। द्रव्य स्वभाव की दृष्टि से सभी धर्मस्वरूप होते हुए भी पर्याय में अर्थात् वर्तमान अवस्था में जो लोग इस स्वभाव धर्म की बात को स्वीकार करते हैं, इसकी श्रद्धा करते हैं, वे पर्याय में भी धर्मात्मा हो जाते हैं, सम्यग्दृष्टि बन जाते हैं। इसी श्रद्धा (दंसण) को उन्होंने धर्म का मूल कहा है। श्रद्धा में वस्तु स्वभाव (आत्मा का जानन स्वभाव) स्वीकृत हो जाने पर जो मोह-राग-द्वेष के अभाव व साम्यभाव/समताभाव रूप वीतरागदशा होती है, उसके लिये **'चारित्तं खलु धम्मो'** अर्थात् चारित्र ही वास्तव में साक्षात् धर्म है - ऐसा कहा है।

'अहिंसा परमोधर्म:' अर्थात् अहिंसा को परम धर्म कहने के

संबंध में भी हमें आचार्य अमृतचन्द्रस्वामी द्वारा कही गई अहिंसा की यथार्थ व्याख्या समझना चाहिये, जिसमें उन्होंने कहा है - **'अप्रादुर्भाव:खलु रागादिनाम् भवत्यहिंसेति'** अर्थात् आत्मा में रागादि भावों की उत्पत्ति न होना ही अहिंसा है।

आचार्य समन्तभद्र भी धर्म की परिभाषा बताते हुए लिखते हैं -

'सद्दृष्टिज्ञानवृत्तानि धर्मं धर्मेश्वरा विदु:।'

- रत्नकरण्ड श्रावकाचार, श्लोक 3

अर्थात् धर्म के ईश्वर तीर्थंकर परमात्मा सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान एवं सम्यक्चारित्र को धर्म कहते हैं। यह धर्म बाहर में नहीं अपने अन्दर होता है, जो कि पूर्ण स्वाधीन है, इसमें देह की पराधीनता भी नहीं है, यही सच्चा धर्म है। यह सच्चा धर्म किसी भी क्षेत्र आदि की पराधीनता नहीं रखता। इसे ही जैन संतों ने निश्चय धर्म कहा है तथा जो इस सच्चे धर्म को प्रकट करने में षट् आवश्यक रूप बाहरी सहचारी कारण हैं, उनको व्यवहार से धर्म कहते हैं।

जब तक जीवन में निश्चय धर्म प्रकट न होवे तब तक बाहरी मंद कषाय अथवा षट् आवश्यकों के पालन रूप शुभभाव स्वरूप व्यवहार धर्म में अपना काल व्यतीत करना चाहिए। जिनके जीवन में इन दोनों में से एक भी प्रकार का धर्म नहीं है, उनके संबंध में प्रसिद्ध कवि भर्तृहरि ने लिखा है -

येषां न विद्या न तपो न दानं, ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्म:।
ते मृत्युलोके भुविभारभूता:, मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति।।

अर्थात् जिनके जीवन में न विद्या है, न तप है, न दान है। न ज्ञान, शील आदि गुण हैं, न धर्म है, वह व्यक्ति इस पृथ्वीतल पर मनुष्य के रूप में पशु के समान है।

कई लोग मानते हैं कि धर्म केवल भारत में ही हो सकता है, अमेरिका आदि देशों में नहीं हो सकता, परन्तु धर्म आन्तरिक स्वाधीन क्रिया है, वह तो कहीं भी हो सकता है। इन म्लेच्छ कहे जाने वाले देशों में भी यदि जीव अपने स्वभाव की श्रद्धा करे तो सम्यग्दर्शन रूपी धर्म अपने जीवन में प्रकट कर सकता है। इसप्रकार वास्तविक जैन धर्म पूर्णत: स्वाधीन है, और ऐसे स्वाधीन जैन धर्म को अपनाने वाले धर्मात्मा मनुष्यों में ही नहीं तिर्यंचों में भी है। यह सच्चा जैन धर्म प्राणी मात्र का धर्म है, जो चारों गतियों में हो सकता है।

इसप्रकार वास्तविक प्रकट करनेरूप निश्चय धर्म तो सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र ही है। आचार्य उमास्वामी ने इसे ही मोक्षमार्ग कहा है - **'सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्ग:'**।

अत: अपनी वर्तमान भूमिका अनुसार व्यवहार धर्म का पालन करते हुए, उससे भी ऊपर उठकर वस्तु स्वभाव की श्रद्धा रूप निश्चय धर्म अपने जीवन में प्रकट करने का प्रयास करना चाहिए। निश्चय धर्म की प्राप्ति पूर्वक सभी जीव पूर्ण सुखी हों - इसी मंगल भावना से विराम लेता हूँ। ●

ब्र. यशपालजी द्वारा तत्त्वप्रचार

1. बेलगांव (कर्ना.) में जैन युवा मण्डल के आग्रह पर दिनांक 12 जून से 22 जून तक ब्र. यशपालजी जैन जयपुर प्रवचनार्थ पधारे।

इस अवसर पर शुद्धात्म सदन हुलबले कॉलोनी शहापुर एवं महावीर भवन हिन्दवाडी में 'जीव जीता कर्म हारा' पुस्तक के आधार पर बन्ध, सत्ता आदि कर्म की दस अवस्थाओं का अध्यात्मगर्भित विवेचन हुआ।

प्रात: एवं सायं दोनों समय लोगों ने अत्यंत जिज्ञासापूर्वक इस विषय को सुना एवं समझा। अधिकांश साधर्मियों ने यह पुस्तक नियमित स्वाध्याय हेतु क्रय की तथा ब्र. यशपालजी के प्रति अत्यंत आभार प्रकट किया। भविष्य में गुणस्थान विवेचन विषय को समझने की भावना भी व्यक्त की।

2. मलकापुर-बुलढाणा (महा.) में ब्र. यशपालजी द्वारा दिनांक 23 जून से 2 जुलाई तक प्रवचनों का लाभ मिला।

इस अवसर पर 'जीव जीता कर्म हारा' पुस्तक के आधार पर बन्ध, सत्ता आदि कर्म की दस अवस्थाओं का अध्यात्मगर्भित विवेचन हुआ। सभी साधर्मियों ने भविष्य में गुणस्थान विवेचन विषय को समझने की भावना भी व्यक्त की।

विधान एवं शिक्षण शिविर संपन्न

1. सनावद (म.प्र.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट के अन्तर्गत समवशरण मंदिर के तत्त्वावधान में दिनांक 16 से 20 जून तक श्री भक्तामर मंडल विधान एवं सरस्वती मंडल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना एवं पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री भिण्ड द्वारा मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त विदुषी राजकुमारी बहिन दिल्ली द्वारा जैसी करनी वैसी भरनी की कक्षा ली गई।

कार्यक्रम में लगभग 300-400 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

विधि-विधान के संपूर्ण कार्य ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली के निर्देशन में पण्डित सुनीलजी 'धवल' भोपाल, पण्डित कांतिकुमारजी इन्दौर, पण्डित रमेशजी ज्ञायक इन्दौर द्वारा संपन्न हुआ।

2. भोपाल (म.प्र.) : यहाँ चौक में श्री सीमंधर जिनालय का 8वाँ वार्षिक उत्सव एवं आश्रम के तत्त्वावधान में फैडरेशन के विशेष सहयोग से प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी दिनांक 16 से 23 जून तक श्री समयसार मण्डल विधान एवं शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित रजनीभाई हिम्मतनगर एवं पण्डित राजेन्द्रजी जैन जबलपुर के प्रवचनों का लाभ मिला।

विधि-विधान के संपूर्ण कार्य ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली के निर्देशन में पण्डित सुनीलजी 'धवल' भोपाल, पण्डित कांतिकुमारजी इन्दौर, पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ, पण्डित रमेशजी ज्ञायक इन्दौर द्वारा संपन्न हुआ। स्थानीय विद्वान ब्र. हेमचन्दजी हेम एवं पण्डित अनिलजी 'धवल' का भी सहयोग प्राप्त हुआ।

कार्यक्रम में लगभग 500-600 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया। बालकक्षाओं में लगभग 200-250 बच्चों ने भाग लिया। **- अशोक जैन**

सिद्धभक्ति

2 पृष्ठभूमि

-डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे ...)

सर्वप्रथम अध:करण, अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरणरूपी तलवार से अनादिकालीन मिथ्यात्वरूपी सुभट पर तीव्र प्रहार किया।

इसप्रकार उसे मारकर उल्टीबुद्धिरूपी, उल्टी मान्यतारूपी मजबूत कोट का उल्लंघन कर प्रथमोपशम सम्यग्दर्शनरूपी स्थिर और अभंग स्थल प्राप्त किया। तात्पर्य यह है कि **आप मिथ्यात्व की ऊबड़-खाबड़ जमीन को पार कर सम्यग्दर्शनरूपी समतल भूमि पर आ गये।**

कुछ लोग कहते हैं कि धर्म धीरे-धीरे होता है। इसलिए हम अभी गृहीत मिथ्यात्व छोड़ देते हैं, अगृहीत को बाद में देखेंगे। उनसे कहते हैं कि **मिथ्यात्व क्रमश: नहीं छूटता, एक साथ ही छूटता है।**

हे भगवन्! आपने करणलब्धि में एक ही चोट में मिथ्यात्व का अभाव करके स्थिर समकित स्थल को प्राप्त कर लिया है।

जयमाला की उक्त पंक्तियों में यह दिशा-निर्देश है कि **यदि किसी को मोक्ष प्राप्त करना है, मोक्षमार्ग में प्रवेश करना है तो उसे सबसे पहले मिथ्यात्व का अभाव करना चाहिए।**

पर आज की स्थिति तो यह है कि सभी को पहले योगा करना है, योगों को काबू में करना है, मन-वचन-काय की चंचलता को रोकना है। तदर्थ ध्यान शिविर चलते हैं और न जाने क्या-क्या होता है।

इसके आगे यदि कोई बात होती है तो कहा जाता है ह्न कषाय मत करो; पर इस पर कोई ध्यान ही नहीं देता कि सबसे पहले तो मिथ्यात्व का नाश होता है, उसके बाद अविरति और प्रमाद का नंबर आता है। कषाय और योग तो उसके बाद आते हैं।

शास्त्रों में कर्मबंध के कारणों का प्रतिपादन महाशास्त्र तत्त्वार्थसूत्र में इसप्रकार किया है ह्न

मिथ्यादर्शनाविरतिप्रमादकषाययोगा बन्धहेतव: ।[१]

मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय और योग ह्न ये पाँच बंध के कारण हैं। इनका अभाव क्रमश: ही होता है। सबसे पहले मिथ्यात्व का नाश होता है, उससे पहले गुणस्थान से निकल कर चौथे गुणस्थान में आते हैं। फिर अविरति जाने से क्रमश: पाँचवें और सातवें-छठवें गुणस्थान में आते हैं। उसके बाद प्रमाद के अभाव में अप्रमत्तादि गुणस्थान आते हैं। फिर कषाय के अभाव होने से ग्यारहवें-बारहवें गुणस्थान को पार कर केवली हो जाते हैं, तेरहवें गुणस्थान में पहुँच जाते हैं, अनन्तज्ञान और अनन्तसुख को प्राप्त कर लेते हैं।

इसके बाद वे अरहंत भगवान सिद्ध होने के लिए बुद्धिपूर्वक कुछ भी नहीं करते। समय पर जो होना होता है, वह सहज ही हो जाता है और वे मोक्ष में चले जाते हैं।

जिन मन-वचन-काय को काबू में करने के लिए अरहंत भगवान भी कुछ नहीं करते; ये प्रथम गुणस्थानवाले उसमें ही उलझ रहे हैं, कुछ शारीरिक क्रियायें करके या शुभभाव करके अपने को कृतकृत्य मान रहे हैं। ऐसे लोगों को सिद्धचक्र विधान की जयमाला में प्ररूपित मुक्तिमार्ग पर विशेष ध्यान देना चाहिए, बंध के कारणों के नाश के क्रम पर ध्यान देना चाहिए।

उक्त संदर्भ में एक विशेष बात विशेष ध्यान देने योग्य यह है कि यद्यपि कषायों का पूर्णत: अभाव बारहवें गुणस्थान में होता है; तथापि उनका अभाव होना चौथे गुणस्थान से ही आरंभ हो जाता है। अनंतानुबंधी क्रोध, मान, माया और लोभ मिथ्यात्व के साथ ही चले जाते हैं।

अप्रत्याख्यानावरण और प्रत्याख्यानावरण क्रोध, मान, माया, लोभ, अविरति और प्रमाद के साथ चले जाते हैं।

मात्र संज्वलन कषाय ही दशवें गुणस्थान तक रहती है, वह पूर्ण वीतराग होने पर जाती है।

अविरति और प्रमाद मूलत: कषायरूप ही तो हैं। मोह दो प्रकार का होता है ह्न दर्शनमोह और चारित्रमोह। दर्शनमोह में मिथ्यात्व और चारित्रमोह में पच्चीस कषायें आती हैं। २५ कषायों से अतिरिक्त और चारित्रमोह क्या है ?

इन २५ कषायों को राग-द्वेष में विभाजित कर दिया जाता है। चार प्रकार का क्रोध, चार प्रकार का मान और अरति, शोक, भय और जुगुप्सा ह्न ये बारह कषायें द्वेष हैं। शेष १३ कषायें राग हैं; जो इसप्रकार हैं ह्न चार प्रकार की माया, चार प्रकार का लोभ और हास्य, रति तथा स्त्रीवेद, पुरुषवेद और नपुंसकवेद।

इसप्रकार चाहे राग-द्वेष कहो, चाहे २५ कषायें कहो ह्न एक ही बात है।

मिथ्यात्व और अनंतानुबंधी कषायें सबसे पहले जाती हैं और शेष कषायें क्रमश: जाती रहती हैं।

अत: यह सहजसिद्ध ही है कि मिथ्यात्व के नाश का उपाय ही सबसे पहला कर्त्तव्य है। **अनन्तानुबंधी कषाय के नाश के लिए अलग से कोई पुरुषार्थ नहीं करना पड़ता।** इसे इसप्रकार भी कह सकते हैं कि **मिथ्यात्व और अनंतानुबंधी कषाय के नाश का एक ही उपाय है और वह है करणलब्धि के परिणाम।**

इसप्रकार सबसे पहले मिथ्यात्व का नाश कर, सम्यग्दर्शन प्राप्त करने

१. तत्त्वार्थसूत्र, अध्याय ८, सूत्र १

के बाद क्या हुआ ह्न यह आगामी पंक्तियों में बताते हैं; जो इसप्रकार हैं ह्न

(पद्धरि छन्द)

निज पर विवेक अंतर पुनीत,
आतम रुचि वरती राजनीति।
जग विभव विभाव असार एह,
स्वातम सुखरस विपरीत देह ।।२।।
तिन नाशन लीनो दृढ़ संभार,
शुद्धोपयोग चित चरण-सार।

इसप्रकार दर्शनमोह का नाश हो गया और मिथ्यात्व के साथ होने वाला महाभारत (महायुद्ध) समाप्त हो गया। सम्यग्दर्शन का साम्राज्य स्थापित हो गया।

भले ही राजा बदल जाय, पर राजनीति न बदले तो देश को कोई लाभ नहीं होता। यही कारण है कि आपने फिर सम्यग्दृष्टि अवस्था में **आत्मरुचि से सम्पन्न निज-पर विवेक की अर्थात् स्व-पर भेदविज्ञान की, अत्यन्त पवित्र आंतरिक राजनीति का प्रवर्त्तन किया।**

आजतक मिथ्यात्व द्वारा संचालित विषय-कषाय की रुचिवाली पर में एकत्व की अपवित्र राजनीति चल रही थी। उसे समाप्त कर आपने स्व-पर विवेक सम्पन्न आत्मरुचि को बढ़ानेवाली राजनीति स्थापित की।

फिर आपने देखा कि जग का वैभव और उसके लक्ष्य से आत्मा में उत्पन्न होनेवाले चारित्रमोह संबंधी राग-द्वेषरूप विभावभाव, कषायभाव असार हैं; इनमें कोई सार नहीं है। आत्मा के आश्रय से उत्पन्न होनेवाले अतीन्द्रिय सुख के रस से यह देह विपरीत है; इसमें भी कोई सार नहीं है; यह भी निस्सार है। **अत: इन असार दु:खमय संयोगों को छोड़ने और चारित्रमोह संबंधी कषायरूप विभावभावों के नाश के लिए आपने शुद्धोपयोगरूप स्वरूपाचरणचारित्र को धारण किया। सम्पूर्ण चारित्र में एक वही सार है; क्योंकि वह निश्चयचारित्र है।**

तात्पर्य यह है कि आप सीधे स्वस्थान अप्रमत्त नामक सातवें गुणस्थान में पहुँच कर ध्यानस्थ हो गये।

जब आप सातवें गुणस्थान से गिरकर प्रमत्तसंयत नामक छठवें गुणस्थान में आये तो....

(पद्धरि छन्द)

निर्ग्रन्थ कठिन मारग अनूप,
हिंसादिक टारण सुलभ रूप ।।३।।
द्वय बीस परीसह सहन वीर,
बहिरंतर संयम धरण धीर।
द्वादश भावन, दश भेद धर्म,
विधि नाशन बारह तप सु पर्म ।।४।।
शुभ दया हेत धरि समिति सार,
मन शुद्धकरण त्रय गुप्ति धार।
एकाकी निर्भय नि:सहाय,
विचरो प्रमत्त नाशन उपाय ।।५।।

तब आपने जगतजनों को अत्यन्त कठिन, अनुपम निर्ग्रन्थ मार्ग को अपनाया, नग्न दिगम्बर दशा धारण की। यह निर्ग्रन्थ अवस्था एकदम अहिंसक अवस्था है, सभी प्रकार की हिंसा को टालनेवाली है और छठवें-सातवें गुणस्थान में झूलते रहनेवाले सन्तों को सुलभ है, सहज है। तात्पर्य यह है कि **जगतजनों को अत्यन्त कठिन होने के साथ-साथ तीन कषाय चौकड़ी के अभाववाले सन्तों को सहज है, सुलभ है।**

यह तो आप जानते ही हैं कि जब कोई चतुर्थ या पंचम गुणस्थानवर्ती श्रावक मुनि दीक्षा लेता है तो आचार्य या जिनेन्द्रदेव की मूर्ति के समक्ष सभी प्रकार के परिग्रह का त्याग कर नग्न दिगम्बर दशा धारण करता है; तबतक वह चतुर्थ या पंचम गुणस्थान में ही रहता है।

नग्न दिगम्बर दशा धारण करके जब वे आत्मध्यान में बैठते हैं तो सीधा सातवाँ अप्रमत्त गुणस्थान होता है; किन्तु अन्तर्मुहूर्त के पहले ही ध्यान भंग हो जाने से प्रमत्तसंयत नामक छठवें गुणस्थान में आ जाते हैं। **छठवाँ गुणस्थान भी गिरते समय प्राप्त होनेवाला गुणस्थान है।**

जब वे छठवें गुणस्थान में होते हैं तो उनकी परिणति तीन कषाय के अभावरूप अत्यन्त निर्मल होती है, शुद्ध होती है; पर उपयोग में प्रमत्त अवस्था आ जाती है, शुभभाव में आ जाते हैं। इसप्रकार परिणति तीन कषाय चौकड़ी के अभावरूप शुद्ध और उपयोग उक्त भूमिका के योग्य शुभ भावों में रहता है। **शुद्धभावरूप संयत और शुभभावरूप प्रमत्त ह्न इसप्रकार यह गुणस्थान प्रमत्त संयत है। देखो, शुभभाव भी प्रमाद है, बंध का कारण है।**

हाँ, तो इस अत्यन्त कठिन निर्ग्रन्थ अनुपम मुक्तिमार्ग को अपनाने वाले वे नग्न दिगम्बर मुनिराज परमवीर हैं, अत्यन्त धीर हैं। बाईस परीषह सहन करने में परमवीर हैं और बाह्याभ्यंतर संयम धारण करने में अत्यन्त धीर हैं।

वे मुनिराज बारह भावनाओं का निरन्तर चिन्तन करते हैं, दश धर्म को धारण करते हैं और कर्मों का नाश करने के लिए परमोत्कृष्ट बारह तपों को तपते हैं। जीवदया के लिए पाँच समितियों का पालन करते हैं और मन की शुद्धि करने के लिए तीन गुप्तियों को धारण करते हैं।

इसप्रकार वे बिना किसी के सहयोग के अकेले ही अत्यन्त निर्भय होकर प्रमाद का नाश करने के लिए उपाय करते हुए आनन्दित रहते हैं।

इसप्रकार यहाँ मुनि भूमिका में होनेवाले निश्चय-व्यवहार चारित्र का निरूपण बखूबी कर दिया गया है।

यह प्रमत्तदशा उन्हें किसी भी रूप में स्वीकार नहीं है; यही कारण है कि उसके नाश के उपाय में निरन्तर संलग्न हैं। **(क्रमश:)**

17 जुलाई 2013, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-32 / 2012-14

मंगलायतन विश्वविद्यालय में जैनदर्शन के पाठ्यक्रम

मंगलायतन विश्वविद्यालय में जैन दर्शन में विभिन्न नियमित पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं।

मास्टर ऑफ आर्ट्स - जैनदर्शन (दो वर्ष), योग्यता - बेचलर डिग्री

बेचलर ऑफ आर्ट्स - जैनदर्शन (तीन वर्ष), योग्यता - 10+2

बेचलर ऑफ आर्ट्स - जैनदर्शन सहित हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत (तीन वर्ष), योग्यता - 10+2

बेचलर ऑफ कॉमर्स - जैनदर्शन सहित (तीन वर्ष), योग्यता - 10+2

डिप्लोमा - जैनदर्शन (एक वर्ष), योग्यता - 10+2

प्रमाण-पत्र - जैनदर्शन (छह माह), योग्यता - 10

पीएच.डी. - जैनदर्शन (तीन-पाँच वर्ष), योग्यता - मास्टर

सर्टिफिकेट कोर्स की फीस रु. 3 हजार, डिप्लोमा/बी.ए. रु.6 हजार प्रतिवर्ष, बी.ए. एवं बी.कॉम. जैनदर्शन के साथ रु. 12 हजार प्रतिवर्ष, एम.ए. रु. 10 हजार, पीएच.डी. रु. 40 हजार। परीक्षा व फार्म फीस अतिरिक्त रु. 1 हजार। छात्रवृत्ति की संभावना - कुछ संस्थाओं /व्यक्तियों ने नियमित पाठ्यक्रम के अन्तर्गत प्रवेश लेने वालों को छात्रवृत्ति देने की सहमति दी है। हिन्दी या अंग्रेजी माध्यम में से एक विकल्प चुन सकते हैं। प्रवेश के लिये सभी पाठ्यक्रमों में 45 प्रतिशत और पीएच.डी. के लिये 55 प्रतिशत अंक अनिवार्य है। अधिक जानकारी के लिये संपर्क करें -

संपर्क सूत्र - दर्शन विज्ञान केन्द्र, मंगलायतन विश्वविद्यालय, 33, माइलस्टोन, अलीगढ-मथुरा हाईवे, बेसवा, अलीगढ-202145

मोबाईल - 07351002565 / 08476007937

E-mail : jl.jain@mangalayatan.edu.in, cps@mangalayatan.edu.in;

website : www.mangalayatan.edu.in

शोक समाचार

नारायणगढ-मन्दसौर (म.प्र.) निवासी श्री शान्तिलालजी अग्रवाल का 84 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी थे। जयपुर शिविर में आप नियमित रूप से भाग लेते थे।

दिवंगत आत्मा चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत सुख को प्राप्त करे - यही मंगल भावना है।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

4 से 13 अगस्त	जयपुर	महाविद्यालय शिविर
2 से 9 सितम्बर	मुम्बई	श्वेताम्बर पर्युषण
9 से 18 सितम्बर	इन्दौर	दशलक्षण महापर्व

दशलक्षण पर्व हेतु आमंत्रण शीघ्र भेजें !

दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रवचनार्थ विद्वानों को बुलाने हेतु पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को आमंत्रण-पत्र समाज/मंदिर/संस्था के लेटर पेड पर शीघ्र भेजें; ताकि समय रहते उचित व्यवस्था की जा सके।

पत्र में अपना पूर्ण पता (पिनकोड सहित) एवं फोन नं. (एस.टी.डी. कोड सहित) भेजें एवं तत्काल संपर्क की सुविधा हेतु ई-मेल आई.डी. हो तो अवश्य भेज देवें।

अनेक बार समाज द्वारा दशलक्षण पर्व के अवसर पर प्रवचन हेतु विद्वानों को अपने यहाँ बुलाने का आमंत्रण अन्तिम समय पर प्राप्त होता है, जिससे व्यवस्था करने में कठिनाई होती है; अत: समाज/मंदिर के व्यवस्थापकों से निवेदन है कि वे अपने यहाँ से आमंत्रण-पत्र तत्काल भिजवायें। **- मंत्री**

पत्राचार का पता - **दशलक्षण पर्व व्यवस्था विभाग, ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर (राज.) 302015 फोन नं.-0141-2705581, 2707458, फैक्स - 0141-2704127**

E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-

वेबसाईट - www.vitragvani.com

संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई

Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

प्रकाशन तिथि : 13 जुलाई 2013

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, एम.ए. द्वय (जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127